

महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थों में मानव-विकास के स्रोत

वेद विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

में

पी०एच-डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध की

संक्षेपिका



निर्देशक

डॉ० दिनेशचन्द्र शास्त्री

पी०एच-डी०, डी०लिट०

रीडर, वेद विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उत्तरांचल)



DEPARTMENT OF VEDA

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya,
Haridwar-249404 (Uttaranchal)

अनुसंधाता

नरेश कुमार

नरेश कुमार

पी०एच०, विद्यावाचस्पति

प्राध्यापक— दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय,

हिसार (हरयाणा)

वेद विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उत्तरांचल)—249404

सन् 2005 ई०

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
संक्षेप-सूची	1
प्राक्कथन	1-7
प्रथम अध्याय	1-89
विषय प्रवेश	
1. ऋषि दयानन्द से पूर्व का भारत—	1-33
वैदिक काल, अमैथुनी सृष्टि व स्थान, वैदिक काल में वर्णाश्रम, वैदिक काल की मान्यता तीन अनादि सत्तायें, वैदिक काल में दया व प्रेम, वेदोत्पत्ति, ब्राह्मणग्रन्थ, अष्टाध्यायी, आरण्यक, उपनिषद्, निरुक्त, निघण्टु, छन्दशास्त्र, मनुस्मृति, रामायण, दर्शन-शास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, महाभारत, अवैदिक-काल का वर्णन, वैदिक युग के विनाश का कारण—महाभारत, वाममार्ग, बृहस्पतिचार्याक, बौद्ध व जैन मत एक, बौद्ध मत, कुमारिलाचार्य का कार्य, आदि शंकराचार्य का कार्य, राजा भोज, मूर्ति-पूजा व पुराण, वैष्णव मत, शैव और शाक्तमत, जैन मतावलम्बियों का आकर्षण 'भवन निर्माण', शाक्तों द्वारा मनुष्य बलि, वाममार्ग की लम्पटता, रामानुज व रामानन्द, कबीर पंथ, सिक्ख पंथ, राधास्वामी, इस्लाम का आक्रमण, ब्रह्म समाज।	
2. ऋषि दयानन्द— एक परिचय	33-36
3. ऋषि दयानन्द के काल में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्वरूप	36-42
4. ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ	42-89
सन्ध्या, भागवत खण्डनम्, पंचमहायज्ञविधि, अद्वैतमत खण्डन, सत्यार्थप्रकाश, वेदभाष्य, चतुर्वेद विषय-सूची, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदान्तिध्वान्त निवारण, शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण, आर्याभिविनय, संस्कार विधि, वेद-भाष्य, ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य से श्री अरविन्द का मुग्ध होना, ऋषि भाष्य का मैक्समूलर पर प्रभाव, आर्योद्देश्यरत्नमाला, भ्रान्ति-निवारण, अष्टाध्यायी भाष्य, आत्मचरित्र, संस्कृतवाक्य प्रबोध, गौतम अहल्या और इन्द्र-वृत्रासुर की सत्यकथा	

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
संक्षेप-सूची	I
प्राक्कथन	1-7
प्रथम अध्याय	1-89
विषय प्रवेश	
1. ऋषि दयानन्द से पूर्व का भारत—	1-33
वैदिक काल, अमैथुनी सृष्टि व स्थान, वैदिक काल में वर्णाश्रम, वैदिक काल की मान्यता तीन अनादि सत्तायें, वैदिक काल में दया व प्रेम, वेदोत्पत्ति, ब्राह्मणग्रन्थ, अष्टाध्यायी, आरण्यक, उपनिषद्, निरुक्त, निघण्टु, छन्दशास्त्र, मनुस्मृति, रामायण, दर्शन-शास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, महाभारत, अवैदिक-काल का वर्णन, वैदिक युग के विनाश का कारण—महाभारत, वाममार्ग, बृहस्पतिचार्याक, बौद्ध व जैन मत एक, बौद्ध मत, कुमारिलाचार्य का कार्य, आदि शंकराचार्य का कार्य, राजा भोज, मूर्ति-पूजा व पुराण, वैष्णव मत, शैव और शाक्तमत, जैन मतावलम्बियों का आकर्षण 'भवन निर्माण', शाक्तों द्वारा मनुष्य बलि, वाममार्ग की लम्पटता, रामानुज व रामानन्द, कबीर पंथ, सिक्ख पंथ, राधास्वामी, इस्लाम का आक्रमण, ब्रह्म समाज।	
2. ऋषि दयानन्द— एक परिचय	33-36
3. ऋषि दयानन्द के काल में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्वरूप	36-42
4. ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ	42-89
सन्ध्या, भागवत खण्डनम्, पंचमहायज्ञविधि, अद्वैतमत खण्डन, सत्यार्थप्रकाश, वेदभाष्य, चतुर्वेद विषय-सूची, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदान्तिध्वान्त निवारण, शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण, आर्याभिविनय, संस्कार विधि, वेद-भाष्य, ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य से श्री अरविन्द का मुग्ध होना, ऋषि भाष्य का मैक्समूलर पर प्रभाव, आर्योद्देश्यरत्नमाला, भ्रान्ति-निवारण, अष्टाध्यायी भाष्य, आत्मचरित्र, संस्कृतवाक्य प्रबोध, व्यवहारभानु, गौतम अहल्या और इन्द्र-वृत्रासुर की सत्यकथा, भ्रमोच्छेदन,	

गोकरुणानिधि, वेदविरुद्धमत खण्डन, वेदाङ्ग प्रकाश, वर्णोच्चारण शिक्षा, सन्धि विषय, नामिक, कारकीय, सामासिक, स्त्रैणतद्धित, अव्ययार्थ, आख्यातिक, सौवर, पारिभाषिक, धातुपाठ, गणपाठ, उणादिकोष, निघण्टु, प्रसिद्धशास्त्रार्थ, उपदेश मञ्जरी।

द्वितीय अध्याय 90-114

1. संस्कार- एक परिचय 90-91
2. संस्कारों का वैज्ञानिक स्वरूप 91-111
गर्भाधान संस्कार का महत्त्व, पुंसवन संस्कार, सीमन्तोन्नयन संस्कार, जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, चूड़ाकर्म संस्कार, कर्णवेध संस्कार, उपनयन संस्कार, वेदारम्भ संस्कार, समावर्तन संस्कार, विवाह संस्कार, वानप्रस्थ संस्कार, संन्यास संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार।
3. संस्कारों की आवश्यकता 111-114

तृतीय अध्याय 115-136

1. वर्ण-व्यवस्था 115-119
वर्ण-व्यवस्था गुणकर्मानुसार, जन्म से वर्ण-व्यवस्था मानने पर हानि, गुणकर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था से लाभ, चारों वर्णों का अधिकारी।
2. आश्रम-व्यवस्था 119-123
आश्रम शब्द, आश्रम-व्यवस्था का महत्त्व, आश्रम-व्यवस्था की आवश्यकता क्यों?, आश्रमों की संख्या, आश्रम-व्यवस्था का उद्भव।
3. वर्ण-व्यवस्था एवं आश्रम-व्यवस्था से मानव का सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास 123-136
वर्ण-व्यवस्था से मानव का सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, आश्रम-व्यवस्था से मानव का सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास, ब्रह्मचर्य आश्रम, ब्रह्मचारी के कर्तव्य, गृहस्थाश्रम, गृहस्थाश्रम के कर्तव्य, वानप्रस्थ आश्रम, संन्यास आश्रम।

चतुर्थ अध्याय 137-163

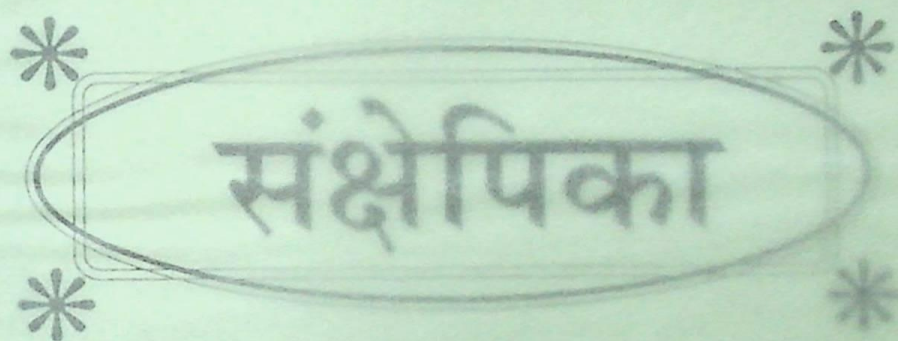
1. शिक्षा एक परिचय 137-139
शिक्षा तथा विद्या में भिन्नता, विद्या क्या है?

2.	प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा-पद्धति का मूल्यांकन प्राचीन शिक्षा पद्धति, प्राचीन शिक्षा की विशेषताएँ, पठन-पाठन विधि, अर्वाचीन शिक्षा-पद्धति।	140-151
3.	शिक्षा पर सबका अधिकार	151-153
4.	नारी शिक्षा पर ऋषि का विशेष ध्यान	153-158
5.	शिक्षा एवं कला	158-163
पंचम अध्याय		164-179
पुरुषार्थ चतुष्टय		
1.	धर्म वैयक्तिक धर्म, पारिवारिक धर्म, सामाजिक धर्म, राष्ट्रीय धर्म।	165-170
2.	अर्थ वेदोक्त अर्थ।	170-173
3.	काम	173-175
4.	मोक्ष	176-179
षष्ठ अध्याय		180-191
1.	मानव-विकास परक वेदों का भाष्य वैयक्तिक विकास, पारिवारिक विकास, सामाजिक विकास, राष्ट्रीय विकास, धार्मिक विकास।	180-191
सप्तम अध्याय		192-230
1.	ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित ईश्वर-उपासना दैनिक संध्या प्रातः व सांय, वेदमंत्रों के माध्यम से उपासना, योगाभ्यास के द्वारा, गायत्री मंत्र के जाप द्वारा।	192-202
2.	यज्ञानुष्ठान अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, याग का लक्षण, पूर्ण मासेष्टि, दर्शेष्टि, सुपर्णचिति सहित सोमयाग, चातुर्मास्य, वाजपेययाग, सौत्रामणि, राजसूययाग, अश्वमेधयाग, पुरुषमेध यज्ञ, सर्वमेध, गोमेध यज्ञ।	202-210
3.	नित्य एवं नैमित्तिक यज्ञ ब्रह्म यज्ञ, अग्निहोत्र (देवयज्ञ), पितृ यज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथि यज्ञ, नित्य यज्ञों का प्रभाव, नैमित्तिक यज्ञ, नैमित्तिक यज्ञ का प्रभाव।	210-217

101-101	101-101	101-101	101-101
102-102	102-102	102-102	102-102
103-103	103-103	103-103	103-103
104-104	104-104	104-104	104-104
105-105	105-105	105-105	105-105
106-106	106-106	106-106	106-106
107-107	107-107	107-107	107-107
108-108	108-108	108-108	108-108
109-109	109-109	109-109	109-109
110-110	110-110	110-110	110-110
111-111	111-111	111-111	111-111
112-112	112-112	112-112	112-112
113-113	113-113	113-113	113-113
114-114	114-114	114-114	114-114
115-115	115-115	115-115	115-115
116-116	116-116	116-116	116-116
117-117	117-117	117-117	117-117
118-118	118-118	118-118	118-118
119-119	119-119	119-119	119-119
120-120	120-120	120-120	120-120
121-121	121-121	121-121	121-121
122-122	122-122	122-122	122-122
123-123	123-123	123-123	123-123
124-124	124-124	124-124	124-124
125-125	125-125	125-125	125-125
126-126	126-126	126-126	126-126
127-127	127-127	127-127	127-127
128-128	128-128	128-128	128-128
129-129	129-129	129-129	129-129
130-130	130-130	130-130	130-130
131-131	131-131	131-131	131-131
132-132	132-132	132-132	132-132
133-133	133-133	133-133	133-133
134-134	134-134	134-134	134-134
135-135	135-135	135-135	135-135
136-136	136-136	136-136	136-136
137-137	137-137	137-137	137-137
138-138	138-138	138-138	138-138
139-139	139-139	139-139	139-139
140-140	140-140	140-140	140-140
141-141	141-141	141-141	141-141
142-142	142-142	142-142	142-142
143-143	143-143	143-143	143-143
144-144	144-144	144-144	144-144
145-145	145-145	145-145	145-145
146-146	146-146	146-146	146-146
147-147	147-147	147-147	147-147
148-148	148-148	148-148	148-148
149-149	149-149	149-149	149-149
150-150	150-150	150-150	150-150
151-151	151-151	151-151	151-151
152-152	152-152	152-152	152-152
153-153	153-153	153-153	153-153
154-154	154-154	154-154	154-154
155-155	155-155	155-155	155-155
156-156	156-156	156-156	156-156
157-157	157-157	157-157	157-157
158-158	158-158	158-158	158-158
159-159	159-159	159-159	159-159
160-160	160-160	160-160	160-160
161-161	161-161	161-161	161-161
162-162	162-162	162-162	162-162
163-163	163-163	163-163	163-163
164-164	164-164	164-164	164-164
165-165	165-165	165-165	165-165
166-166	166-166	166-166	166-166
167-167	167-167	167-167	167-167
168-168	168-168	168-168	168-168
169-169	169-169	169-169	169-169
170-170	170-170	170-170	170-170
171-171	171-171	171-171	171-171
172-172	172-172	172-172	172-172
173-173	173-173	173-173	173-173
174-174	174-174	174-174	174-174
175-175	175-175	175-175	175-175
176-176	176-176	176-176	176-176
177-177	177-177	177-177	177-177
178-178	178-178	178-178	178-178
179-179	179-179	179-179	179-179
180-180	180-180	180-180	180-180
181-181	181-181	181-181	181-181
182-182	182-182	182-182	182-182
183-183	183-183	183-183	183-183
184-184	184-184	184-184	184-184
185-185	185-185	185-185	185-185
186-186	186-186	186-186	186-186
187-187	187-187	187-187	187-187
188-188	188-188	188-188	188-188
189-189	189-189	189-189	189-189
190-190	190-190	190-190	190-190
191-191	191-191	191-191	191-191
192-192	192-192	192-192	192-192
193-193	193-193	193-193	193-193
194-194	194-194	194-194	194-194
195-195	195-195	195-195	195-195
196-196	196-196	196-196	196-196
197-197	197-197	197-197	197-197
198-198	198-198	198-198	198-198
199-199	199-199	199-199	199-199
200-200	200-200	200-200	200-200

विषय-सूची

4.	यज्ञ का वैज्ञानिक आधार	217-224
	वेदी-निर्माण में विज्ञान का योगदान, यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि, द्रव्य-विज्ञान, मनोविज्ञान।	
5.	ऋषि दयानन्द का विश्व पर उपकार	224-230
	विद्वत् समुदाय में वैचारिक क्रान्ति का उदय, अनसुलझे प्रश्नों का सटीक उत्तर, पुनः वैदिक युग का उद्घोष।	
	अष्टम अध्याय (उपसंहार)	231-233
	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची	234-242





संक्षेपिका

